thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 30 रोहतक, 7 जनवरी, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत द्वारा आयोजित

'वेदों की ओर लौटो' कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

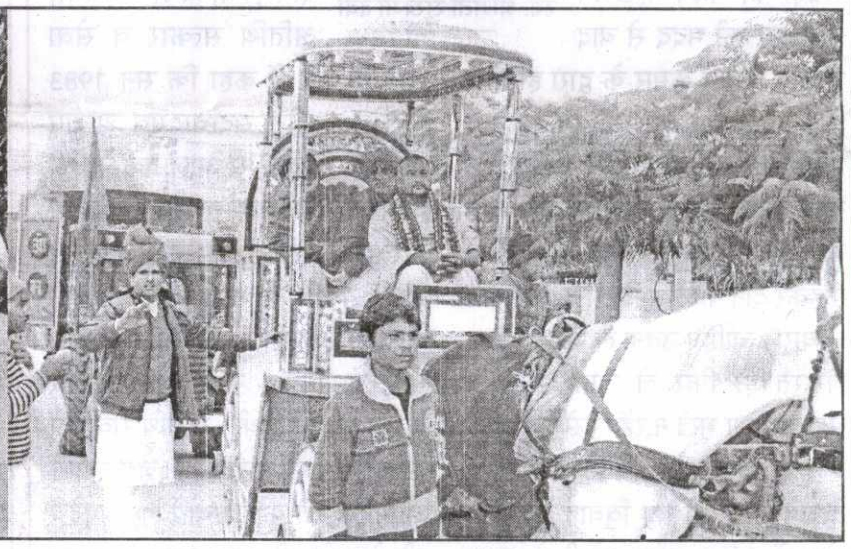

मा० रामपाल आर्य महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने बताया कि **'वेदों की ओर लौटो'** अभियान के तहत जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के प्रधान रमेश आर्य के नेतृत्व में उसकी पूरी कार्यकारिणी के सहयोग से 2 दिसम्बर 2014 से वेदप्रचार यात्रा का शुभारम्भ हुआ जिसका समापन अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान दिवस पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-15, सोनीपत में विशाल सार्वजनिक सभा करके किया गया। सभा की अध्यक्षता आचार्य विजयपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की और मंच संचालन श्री जगदीश चहल डी.पी.ई. ने किया। प्रात: 8 से 9 बजे तक आर्यसमाज मॉडल टाउन सोनीपत में यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यसमाज मॉडल टाउन सोनीपत के पुरोहित सतनदेव व यज्ञ के संयोजक आचार्य सन्दीप जी रहे।

शोभायात्रा आर्यसमाज मॉडल टाउन से प्रारम्भ होकर बटन फैक्टरी, कच्चे क्वार्टर, अशोक नगर, गीता भवन चौक, बस अड्डा, गांधी चौक सैक्टर-14 मार्किट होती हुई डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-15 सोनीपत पहुंची जिसमें डेढ़ दर्जन झांकियों का नजारा देखने लायक रहा।

सबसे आगे 2 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2014 तक प्रतिदिन तीन गाँव में वेदप्रचार की धूम मचाने वाले वैदिक विद्वान् नरेशदत्त बिजनौर का रथ चल रहा था जिसमें उनकी भजन मण्डली स्वामी श्रद्धानन्द जी पर दिल छूने वाले भजन गुनगुना रहे थे। उसके आगे-आगे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का बैंड बजाते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारी केसरिया पोशाक पहने हुए आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। फिर घोड़ों पर सवार केसरिया पगड़ी पहने हुए आर्यसमाजों के प्रधान पीछे-पीछे घोड़ा-बग्गी में आचार्य विजयपाल जी, आचार्य हरिदत्त जी, आचार्य ऋषिपाल जी, एक ट्रैक्टर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का वह दृश्य जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी छाती अंग्रेजों की तोपों के आगे अड़ा रहे थे। दूसरे व तीसरे ट्रैक्टर में कन्या गुरुकुल व लड़कों के गुरुकुल की शुरुआत का दृश्य देखने का बनता था। चौथे व पाँचवें ट्रैक्टर में गुरुकुल के ब्रह्मचारी यज्ञ करते हुए व महिलाएं स्वामी श्रद्धानन्द के गीत गाती हुई चल रही थी। गुरुकुल के ब्रह्मचारी योगा, लाठी चलाना, तलवार चलाना तथा ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य का प्रदर्शन कर रहे थे।

उसके बाद हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र जी, गोरक्षा दल के कुलदीप आर्य, मा० रामपाल आर्य सभामन्त्री, देवेन्द्र आर्य वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के मन्त्री, धर्मपाल जी, वीरसैन धीर, कोषाध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रणधीर सिंह ढुल, सभी समाजों के प्रधान, सभी संस्थाओं के मुखिया, आर्य वीर दल हरियाणा के महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य, वैदिक यज्ञ समिति, हिन्दू मंच के गणमान्य व्यक्ति चल रहे थे। उसके

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

प्रेरणा दिवस-आत्मिक शान्ति-यज्ञ

देश की आजादी से बहुत पहले गांव मातनहेल (झज्जर) निवासी चौ० मोलूराम जी नम्बरदार ने कब आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर यज्ञोपवीत लिया, परिवार का कोई व्यक्ति नहीं जानता है। किन्तु इस परिवार में आर्यसमाज रूपी अमरबेल आज भी भली-भान्ति फल-फूल रही है। इस परिवार को आम आदमी वर्षों से आर्यसमाजी कहते आ रहे हैं। सुना जाता है कि स्वामी ओमानन्द जी का कोई प्रचार, अन्न व धन संग्रह का काम सुखचैन नम्बरदार की मदद से बाद में डॉ० विजय कुमार के द्वारा ही होता था। गुरुकुल झज्जर से वयोवृद्ध श्री फतेहसिंह जी भण्डारी ने बताया कि स्व० सुखचैन नम्बरदार का दान करने का ढंग अपेक्षाकृत भिन्न था। वे यूं कहकर दान करते थे कि 'जितना (अन्न व चारा) चाहिए उतना ले जाइए', जब जरूरत हो फिर ले जाना, गाय व ब्रह्मचारीगण भूखे न रहें। ऐसे ऋषिभक्त दानवीर परिवार में जन्मे डॉ० विजयकुमार जी का विवाह कादयान गोत्र में उत्पन्न सुखमा देवी के साथ हुआ। जो 3 दिसम्बर 2014 को 83 वर्ष की दीर्घायु व्यतीत कर नश्वर संसार से विदा हो गई।

स्व. श्रीमती सुखमा देवी

12 दिसम्बर को उनके आवास स्थल गांव मातनहेल में प्रेरणा दिवस एवं आत्मिक शान्ति यज्ञ का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी एवं डॉ० राजपाल जी बरहाणा के ब्रह्मत्व में किया गया। आचार्य जी ने वैदिक मन्त्रों से अमृत बरसाया तो भगवान् श्रीकृष्ण के गीता उपदेश से जीव की अमरता और शरीर की नश्वरता का सुन्दर चित्रण भी चित्रित किया। उन्होंने उनके पुत्रों यशपाल व वेदपाल को सपरिवार जनेऊ भी धारण कराकर माता-पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए आर्यसमाज की परम्पराओं का निर्वहन करते हुए नशे-विषयों से दूर रहने का संकल्प करवाया। डॉ० राजपाल जी ने वेद, उपनिषद् व महाभारत के सुन्दर उद्धरणों से आत्मा-परमात्मा तथा जीव की सद्गति का उपदेश किया। उन्होंने परमात्मा की व्यवस्था की तारीफ करते हुए कहा कि जीव संसार में जितने अच्छे कर्म करता है उसे अगले जन्म में उतना ही सुन्दर तन-मन सहित अच्छे परिवार में जन्म मिलता है। वृद्धावस्था में कोई भी जीव इन्द्रियों के असमर्थ होने पर उपलब्ध भोगों को नहीं भोग सकता है अत: ईश्वरीय व्यवस्था के तहत परमात्मा उसे पुन: नया शरीर धारण करा देता है ताकि जीव अच्छे कर्मों के सुफल ग्रहण कर सके। इसमें बुद्धिमानों के लिए शोक और मोह की कोई बात ही नहीं है। यक्ष-युधिष्ठिर संवाद की भी चर्चा की गई। गांव से ही मदनलाल शास्त्री ने भी स्व० सुखमा देवी के गुणों में स्पष्टवादिता, ममत्व, दानवृत्ति, त्यागभावना, अतिथि सत्कार व सेवा भाव के बारे में कहा कि सन् 1983 के ग्रीष्मकालीन 'सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर' से आज तक जो भी आर्यसमाज का कार्य हुआ उन्होंने अपने परिवार को तन-मन-धन से समर्पित रखा। यद्यपि वे तात्कालिक हालातों के तहत विद्यालय नहीं जा सकी थी, मगर इंसानियत, सादगी व सदाचार की साक्षात् मूर्ति थी। अतिथि सेवा को अपना सौभाग्य मानती थी। जब स्वामी ओमानन्द जी को आचार्य भगवान्देव जी के नाम से जाना जाता था, तब मातनहेल गांव में आर्यसमाज के प्रचार कार्य इसी परिवार के भरपूर सहयोग से सम्पन्न होते थे। आज यहाँ श्री धर्मपाल जी नम्बरदार, भाई राजपाल जी एडवोकेट, श्री सुकर्मपाल जी इस समाज को पूर्ववत् तन-मन-धन से सहयोग दे रहे हैं। अपने न पढ़ पाने की कसक को स्व० सुखमा देवी जी ने पुत्रियों, पुत्रवधुओं को स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा दिलाकर पूरा किया। ऊँच-नीच, भेद-भाव व जात-पात में विश्वास न रखने वाली पुण्य आत्मा सुखमा देवी की आत्मिक शान्ति के लिए सभी ने यज्ञ की पवित्र अग्नि में आहुति दी। इस अवसर पर आर्यसमाज चरखी दादरी के पदाधिकारियों उनके भतीजे डॉ० अमीरसिंह जी कादयान, राजपाल जी एडवोकेट, सुकर्मपाल जी, श्री फतेहसिंह जी भण्डारी, मा० हरिसिंह जी, मा० सूधनसिंह जी के साथ गणमान्य नाती-रिश्तेदारों ने भी भावपूर्ण शब्दों से श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनके सुपुत्र यशपाल व वेदपाल आर्य ने गुरुकुल झज्जर व गऊशाला मातनहेल को दान दिया तथा सभी को मधुर भोजन कराकर ससम्मान विदा किया।

-मदनलाल शास्त्री, मातनहेल (झज्जर)

राव हरनारायणसिंह आर्य का वैदिक रीति से हुआ अन्तिम संस्कार

श्री वेदप्रकाश आर्य अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पिता राव हरनारायणसिंह आर्य का दिनांक 26.12.2014 वार शुक्रवार को 96 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। राव हरनारायणसिंह आर्य राव माडूराम जी पहलवान के सुपुत्र थे। इनका जन्म वैदिक परिवार में हुआ। ये 1937 में सेना में भर्ती हुए और 1945 में सेना इसलिए छोड़ दी कि अंग्रेजों की सेना में रहने से देश की स्वतन्त्रता के लिए सहयोग नहीं हो सकता। 1945 से 1947 तक वे समाज में रहकर खेती भी करते रहे और समय-समय पर अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार भी करते रहे। इन्हें पाँच भाषाओं का ज्ञान था-हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, संस्कृत व अंग्रेजी। इन्होंने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन लगातार किया और वेद-शास्त्रों के मन्त्र अर्थ सहित बहुत से याद रहते थे जो कि लोगों को सुनाकर वेद-ज्ञान बांटते थे। महर्षि दयानन्द जी की अर्द्ध शताब्दी अजमेर में 1933 में हुई थी उसमें इनके ताऊ जी उपस्थित थे और महर्षि की सभी कृतियां घर लेकर आये थे जिससे इनको स्वाध्याय का मौका मिला। जब सेना में भर्ती हुए तब भी इनके शरीर व गले पर यज्ञोपवीत की फोटो आज भी मौजूद है। ये कभी जीवन में बीमार नहीं रहे, शरीर मरते समय तक स्वस्थ रहा। घी खाते व शरीर से कर्म करते हुए प्राण त्यागे। इनका भरा-पूरा परिवार है। इनके पिता श्री राव माडूराम पहलवान के दो पुत्र व एक पुत्री थी। इनका छोटा भाई अमीलाल यादव इण्डिया कबड्डी चैम्पियन थे। राव हरनारायणसिंह आर्य के 8 पुत्र व एक पुत्री हुई। पुत्री को उस समय गुरुकुल दाधिया से शास्त्री करवाया। एक पौत्र को गुरुकुल घासेड़ा में पढ़ाया। इनका मंझला पुत्र श्री वेदप्रकाश आर्य अब आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में दो कार्यकाल से अन्तरंग सदस्य चले आ रहे हैं। जिला महेन्द्रगढ़ के वेदप्रचार मण्डल के मन्त्री हैं और गाँव दौंगड़ा अहीर आर्यसमाज के प्रधान हैं। भारत स्वाभिमान ट्रस्ट स्वामी रामदेव संस्था के भी दो वर्ष तक जिला प्रधान रहे। इनके 17 पौत्र, पौत्री व 7 प्रपौत्र-पौत्रियां हैं। राव हर नारायण सिंह का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री श्री मा० रामपाल दहिया जी, आचार्य पं० रमेश जी व गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों की उपस्थिति में वैदिक मन्त्रोच्चारण द्वारा एक मन गाय का देसी घी व एक मन सामग्री की पुष्टिकारक पदार्थों से आहुतियां डालकर सम्पन्न हुआ। महर्षि दयानन्द जी की संस्कार विधि अनुसार चिता बनाई गई थी। इनके आठों बेटे भी कबड्डी के हरियाणा स्तर के खिलाड़ी रहे। इनका भानजा अमेरिका में प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. ओमप्रकाश लाम्बा हैं तथा इनके एक चचेरे भाई कृपाराम यादव आजाद हिन्द फौज में कैप्टन के पद पर थे।

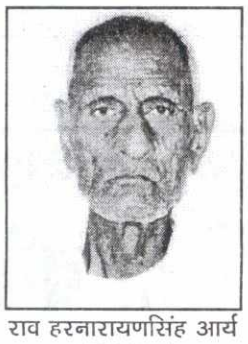

राव हरनारायणसिंह आर्य

राव हरनारायणसिंह आर्य के निधन से पूरे समाज को भारी क्षति हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्गति देवे तथा व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति देवे।

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

आर्य निवास नलवा (हिसार) में दीपावली के दिन 23.10.2014 को लैक्चरार श्री राजवीर आर्य के 37वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा किया गया तथा स्नेही जी ने राजवीर आर्य को आशीर्वाद दिया और प्रभु से अच्छा स्वास्थ्य व लम्बी आयु की प्रार्थना की गई। वानप्रस्थ जी ने इस अवसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री भलेराम आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती विमला आर्या, पवन कुमार आर्य आदि उपस्थित थे।

-नरेन्द्र आर्य, मन्त्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

उन्नति के दो मूल मंत्र

-: वेद-मन्त्र :-

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥ 5॥ 169॥ (सामवेद)

शब्दार्थः-(नः) हमारे (कया) = उत्या (ऊतो) आनन्दमय रक्षण के हेतु से वह प्रभु (चित्रः) = उत्तम संज्ञान के देने वाले (सदावृधः) = सदा हमारा वर्धन करने वाले (सखा) = समान ज्ञान वाले मित्र (आभुवत्) सब प्रकार से होते हैं। और साथ ही (कया) कुछ अद्भुत आनन्दप्रद (शचिष्ठया) = अत्यन्त शक्तिप्रद (वृता) = आवर्तन द्वारा वे प्रभु सदा हमारे सखा वृद्धि के करनेवाले होते हैं। उन्नति दो बातों पर निर्भर करती है। प्रथम तो ज्ञान को प्राप्त करना है। बिना ज्ञान प्राप्ति के उन्नति का संभव नहीं। वस्तुतः ज्ञान ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है, उसके अभाव में तो वह पशु ही रह जाता है। और दूसरी बात कर्त्तव्य कर्मों का नियमित आवर्तन है। वेद के शब्दों में सूर्य-चन्द्रमा की तरह नियमित गति से हम आगे बढ़ते चलें। न रुकें, न सुस्त हों। इस नियमितता से शक्ति प्राप्त होती है। चरक में स्वास्थ्य के नियमों में इस नियमितता को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। उन्नति के इन दोनों रहस्यों को समझकर यदि हमारा तदनुसार अनुष्ठान होगा तो हम सब दिव्य गुणों को प्राप्त करके इस मंत्र के ऋषि 'वामदेव' होंगे और उत्तम इन्द्रियों वाले होने के कारण 'गौतम' होंगे।

भावार्थः-ज्ञान और नियमितता को हम अपने जीवन का सूत्र बना लें।

—आचार्य बलदेव

गोशाला संघ हरियाणा सोसायटी का चुनाव

गोशाला संघ हरियाणा सोसायटी का चुनाव आचार्य विजयपाल जी की अध्यक्षता में 24 दिसम्बर 2014 को श्री लाडवा गोशाला, लाडवा (हिसार) में दोपहर 12 बजे गोशाला संघ हरियाणा सोसायटी का आगामी त्रिवार्षिक चुनाव (2014 से 2017 तक का) सर्वसम्मति से आचार्य योगेन्द्र आर्य को आगामी तीन वर्ष के लिए गोशाला संघ हरियाणा सोसायटी का प्रधान चुना गया। बाकी कार्यकारिणी के चुनाव का अधिकार आचार्य योगेन्द्र आर्य को दिया गया। उन्होंने सभी गोशालाओं के प्रतिनिधियों से पूरे हरियाणा के प्रत्येक जिले में से स्टेट कार्यकारिणी के लिए एक-एक व्यक्ति के नाम मांगे जो कार्यकारिणी में लिये जायेंगे—

प्रधान-आचार्य योगेन्द्र आर्य, उपप्रधान-श्री गोपाल स्वामी, श्री सुमनकुमार गुप्ता, श्री आनन्द राज, श्री रामकुमार, श्री जगतपाल सिंह, महामंत्री-श्री कुलवीर खर्ब, मन्त्री-आचार्य सर्वमित्र आर्य, उपमंत्री-श्री अजीत सिहाग चौटाला, कोषाध्यक्ष-श्री योगेश।

अन्तरंग सदस्य-आचार्य विजयपाल, आचार्य देवव्रत, स्वामी सतबीरानन्द, श्री वेदप्रकाश, श्री हरिसिंह यादव, श्री श्यामसुन्दर, श्री बलवंतसिंह, श्री जगदीश मलिक, मा० शेरसिंह, आचार्य ऋषिपाल, श्री सन्दीप कटारिया।

आचार्य योगेन्द्र ने सभी गोशाला लाडवा के प्रधान व सम्पूर्ण कार्यकारिणी का धन्यवाद किया। सम्पूर्ण हरियाणा की गोशालाओं ने गोशाला लाडवा की व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए प्रेरणा भी प्राप्त की कि सभी गोशालायें इसी गोशाला की तर्ज पर अपना कार्य करें। शान्तिपाठ के बाद गोमाता के जयकारे लगाकर सभा समाप्त हो गई।

पुण्यतिथि पर यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन

हिसार। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार) के आनन्द स्वामी हॉल में 26.12.2014 को स्व० पं० विश्वमित्र शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज नागोरी गेट के चौथी पुण्यतिथि पर यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा युवा वैदिक विद्वान् विद्यालय के आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी थे। वेदपाठ विद्यालय के छात्रों ने किया। यज्ञ के यजमान उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशिबाला व उनकी सुपुत्री पल्लवी ने अपने पति सहित ग्रहण किया।

प्रातः 10 बजे वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास की अध्यक्षता में एक सभा हुई। मंच का संचालन भी डॉ. प्रमोद योगार्थी ने किया। गुरुकुल धीरणवास के छात्र व विद्यालय के छात्रों तथा पं० सूर्यदेव वेदांशु पुरोहित आर्यसमाज मॉडल टाउन, बहिन सीमा नागपाल व स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना माता शन्नोदेवी ठकराल के ईश्वरभक्ति के प्रेरणा दायक भजन हुये। स्वामी माधवानन्द, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर, पं० रामसुफल शास्त्री (हांसी), वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही आदि ने पं० विश्वमित्र के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला तथा अनेक प्रेरणा दायक संस्करण सुनाए। स्नेही जी ने श्रद्धांजलि के अतिरिक्त शहीद शिरोमणि ऊधमसिंह के जन्म दिवस के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। युवकों से अनुरोध किया कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए आगे आयें।

इस अवसर पर ब्र दीक्षेन्द्र आर्य, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, ईशकुमार आर्य, मा० रतनसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज सिवानी बोलान, आचार्य सन्तराम आर्य, सतपाल आर्य सहमंत्री प्रादेशिक सभा नई दिल्ली, आचार्य राजमल ढाका गुरुकुल धीरणवास, मा० रणधीर आर्य गुरुकुल आर्यनगर, उपरोक्त दोनों गुरुकुलों के छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। श्री सत्यपाल अग्रवाल, दलवीर आर्य मुकलान, बजरंगलाल आर्य, नत्थूसिंह आर्य, प्रमोद लाम्बा आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया। डेढ़ बजे शान्तिपाठ के बाद बहिन शशिबाला की ओर से बनाए भोजन ऋषिलंगर में भोजन किया। विद्यालय के अध्यापक डॉ. नरेश आर्य, कैलाश शास्त्री, नवीन शास्त्री, राजू आर्य, दीपक आर्य का व्यवस्था में विशेष सहयोग रहा।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री
वेदप्रचार मण्डल (हिसार)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज मॉडल कालोनी यमुनानगर (हरयाणा) में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर के तत्त्वावधान में दिनांक 21 दिसम्बर 2014 रविवार को प्रातः यज्ञ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा धर्मेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ के यजमानों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के बाद उपस्थित सभी लोगों ने प्रातःराश (नास्ता) किया। पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की गई जिसमें आर्यजगत् के महान् विद्वान् डॉ० वेदप्रकाश जी विद्यालंकार (प्रो० डी.ए.वी. कॉलेज अम्बाला शहर, लाहौर) ने स्वामी जी के जीवन पर भिन्न-भिन्न घटनाओं को लेकर प्रकाश डाले। उनका अध्ययन स्वामी जी के जीवन चरित्र पर गहन है। आचार्य डॉ० राजकिशोर जी (गुरुकुल शादीपुर) यमुनानगर व डॉ० कमला वर्मा (पूर्वमंत्री हरियाणा सरकार यमुनानगर) ने भी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाले। रुढ़की हरिद्वार से आए बहुत प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कल्याणसिंह वेदी जी ने स्वामी जी के जीवन पर मधुर भजनों के माध्यम से लोगों को मोहित कर दिया।

इस मौके पर यमुनानगर जिला के भिन्न-भिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं लोगों ने भाग लिया। आचार्य मॉडल कालोनी के प्रधान श्री विनोद भसीन, मंत्री डॉ. गेन्दाराम आर्य सहित समाज के सभी सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के पश्चात् ऋषिलंगर बेटी राजबाला पूर्व मेनेजर बैंक व श्री प्रदीप माथुर परिवार द्वारा आयोजित किया गया।

—डॉ० गेन्दाराम आर्य, मन्त्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय में आर्य बन्धुओं की सुविधाओं को देखते हुए सभा ने अपना निजी फेसबुक **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** व ट्वीटर अकाउंट **'आर्य प्रतिनिधि सभा'** तैयार किया है जिससे आर्य महानुभावों को भविष्य में काफी सहयोग मिलेगा।

संपर्क सूत्र :- मंजीत-मो० 9812611701 **—सभामन्त्री**

hearyasamaj.org

कितना विचित्र है संसार?

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

नि:सन्देह आपत्ति आने पर (विशेषत: दैवी, जैसे कि जून 2013 को उत्तराखण्ड में) आज भी हजारों-लाखों का दान करने वाले हजारों दानी सामने आते हैं। यह बात किसी देश, समाज के लिए गौरव की है। चाहे सारे धनवानों को सामने रखने पर यह संख्या अपर्याप्त लगती है। पुनरपि मानव समाज की सामाजिकता स्वत: सिद्ध हो जाती है।

हमारे यहां गरीबी की रेखा से इतने अधिक नीचे हैं कि उन्हें सादी रोटी भी दुर्लभ बनी हुई है। उनमें से करोड़ों रोजगार करके खाना-कमाना चाहते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए बनाई गई 'म.न.रे.गा.' योजना हृदयहीन प्रबन्धकों ने भ्रष्टाचार में डुबो दी। अपनी जेब से कुछ सहायता करने की सोच के स्थान पर उस योजना को ही मुफ्त का माल समझकर ऊपर की कमाई का धन्धा बना लिया गया।

हमारे यहां इस विवशता भरी भूख-नंग के बीच में 30 करोड़ के लगभग जनसंख्या आती है। फिर भी पैसे वाले जिस प्रकार बढ़-चढ़कर अपनी विलासिता पर पैसा बहाते हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है कि ये सारे पर्याप्त पढ़े-लिखे अपने अन्दर सहानुभूति भरा दिल और सामाजिक सोचयुक्त दिमाग रखते हुए भी अपनी विलासिता की तुलना में एक आधा प्रतिशत भी गरीबों की सहायता में खर्च नहीं करते।

इसके साथ बढ़ती महंगाई की जितनी अधिक चर्चा, चिन्ता होती है। आश्चर्य तो यह है कि इस स्थिति में भी धूम्रपान-मद्यपान जैसे नशे जिस प्रकार विविध रूप में जब-कभी, जहाँ कहीं आए दिन बढ़ रहे हैं। यह और भी भयावह बात है कि इन गरीबों में से भी अनेक नशों में डूबे मिलते हैं। हां, सभी इन नशों से होने वाले नाश-विनाश से सहमत हैं। इस बढ़ती महंगाई में भी इन नशों के वर्ताव में कोई कमी नहीं आ रही है।

इस पर भी समाज में अमर बेल की तरह पनपता फैशन, स्टैण्डर्ड (उच्च रहन-सहन का स्तर), दिखावा, हमारी दयाभावना और सोच के दिवालिएपन को बता रहा है। दिवाली पर फटाकों की होड़ और होली पर रंगों से बार-बार भरने-नहलाने की स्पर्धा गरीबों का मुंह चिढ़ाने वाली बात बन जाती है।

उपसंहार-आज जीवन में स्पष्ट रूप से नशों की भरमार, असंयमित जीवन, खान-पान में मर्यादा का अभाव, लापरवाही रोग पैदा कर रही है। फिर भी ठोकर पर ठोकर खाते हुए भी जान-बूझकर संभलते नहीं। इस पर भी फैशन का दिखावा और निरर्थक धार्मिक कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है।

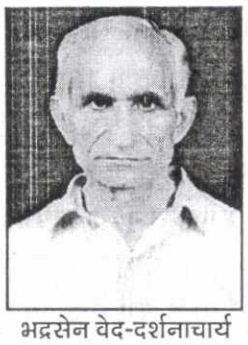
भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

इलाज-आज के संसार की विचित्रता का मूल कारण है—विषमता और उसका एक बड़ा कारण है विचारशीलता का अभाव। अत: इस विकार का उपचार सामाजिक भावना से ही हो सकता है। सामाजिक सहानुभूति विचारशीलता से आती और स्थायी रह सकती है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक दिनों का इतिहास इस बात का साक्षी है, आर्यसमाज ने अपने उन दिनों के सदस्यों में सामाजिक सद्भाव और विचारशीलता जगाकर ही सफलता प्राप्त की थी। संसार से तभी विषमता कम हो सकती है, जब समाज में सहानुभूति और विचारशीलता बढ़ती है।

आर्य उपदेशक महाशय चन्द्रभानु जी आर्य का देहान्त

दिनांक 23.12.2014 को 85 वर्ष की आयु में कुछ समय से अस्वस्थ रहने से आर्य भजनोपदेशक महाशय चन्द्रभानु जी आर्य का निधन हो गया। यह दु:ख़द समाचार सुनकर भलेराम आर्य पूर्व प्रधान आर्यसमाज जिला रोहतक तथा सभी आर्य परिचितों को बड़ा दु:ख हुआ। स्व० चन्द्रभानु आर्य जी बचपन से ही गुरुकुल घरौंडा से जुड़े हुए थे। आपने शिक्षा भी गुरुकुल घरौंडा से प्राप्त की। आपकी बुद्धि और स्वास्थ्य को देखकर स्वामी रामेश्वरानन्द जी आपको अपने साथ रखकर गुरुकुल की जिम्मेदारी सौंपना चाहते थे। किन्हीं कारणों से आपके पूर्वजों ने यह स्वीकार नहीं किया लेकिन स्वामी जी ने यह सलाह स्वामी भीष्म जी को दी कि ऐसे नौजवान को एक अच्छा आर्य भजनोपदेशक तैयार करो जो भविष्य में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार कर सके। अत: स्वामी भीष्म जी ने आपको उच्च कोटि का प्रचारक तैयार किया जिसके लिये आपने पहले पैतृक जिला करनाल में कार्य किया फिर 1957 के हिन्दी आन्दोलन के लिये गांव-गांव जाकर प्रचार किया जिसके लिए हिन्दी सत्याग्रह चला और हरियाणा राज्य के लिये एक संघर्ष कमेटी तैयार की गई जिसे 1942 में पंजाब के मुख्यमंत्री कैरों के विरुद्ध संघर्ष किया जिसके आधार पर 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा प्रदेश को नये राज्य का दर्जा मिला। आप स्वयं तो स्वामी जी की विचारधारा से प्रभावित होकर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहते लेकिन आपके जीवन साथी ने अपने परिवार के 4 पुत्रों और 2 पुत्रियों को अपने उत्तम संस्कारों से तैयार किया जिनका प्रभाव अब तक दिख रहा है। आपके परिवार के सभी सदस्य नित्य यज्ञ करते हैं और हर घर पर गाय का दुग्ध और घी प्रयोग किया जाता है। यह सब आप दोनों के धर्मपरायण और उत्तम संस्कारों से ही है। आपने अपने अथक प्रयास से आर्य विचारधारा की मासिक पत्रिका शान्तिधर्मी का संचालन किया जो आजकल देश और विदेश तक आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार कर रही है। पत्रिका का सम्पादकीय लेख पढ़कर आपकी विचारधारा पुरानी यादें दिला देती हैं।

अत: स्व० महाशय चन्द्रभानु जी आर्य की स्मृति में एक त्रिवेणी (बड़, पीपल और नीम) लगाई जाये ताकि प्रदूषणमुक्त जलवायु बना रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवार व आर्यजनों को जो दु:ख हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामन्त्री

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद के ब्रह्मचारियों का शानदार प्रदर्शन

दिनांक 22, 23/12/2014 को सैक्टर-12 खेल परिसर फरीदाबाद में सम्पन्न हुए दो दिवसीय दंगल प्रतियोगिता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों का उत्तम प्रदर्शन रहा। विजेता खिलाड़ी जनवरी में राज्यस्तरीय हरियाणा कुमार व हरियाणा केसरी दंगल अंबाला में भाग लेंगे।

कुश्ती में जीते बच्चे

फोटो उपलब्ध नहीं है।			फोटो उपलब्ध नहीं है।		
विशाल गुप्ता	मणिकान्त	मंजीत	करन जोशी	आशीष कुमार	प्रसन्नजीत
30 कि.ग्रा. I	34 कि.ग्रा. II	38 कि.ग्रा. I	42 कि.ग्रा. II	45 कि.ग्रा. I	45 कि.ग्रा. II

19 वर्षीय नेशनल कबड्डी प्रतियोगिता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया खिलाड़ी परिचय इस प्रकार है—

आनन्द	धीरज	मोरध्वज	देवेन्द्र	रितेश	सागर	सुनील

—आचार्य ऋषिपाल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद

बीड़ी, शराब, सिगरेट आदि पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे सदैव दूर रहना चाहिए।

hearyasamaj.org

धर्मान्तरण पर कानून बने : आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव

आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्यसमाज शिवाजीनगर गुड़गांव के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के

88वें बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में आर्यजगत् के विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के चलाये शुद्धि कार्यक्रम की चर्चा की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल आर्य ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए यह प्रस्ताव रखा कि पिछले एक सप्ताह से पूरे राष्ट्र में जो एक नाटक हो रहा है, उससे पूरा राष्ट्र स्तब्ध है। कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समर्थकों ने आगरे में हुए धर्मान्तरण पर बड़ा शोर मचाया परन्तु उस समय वहाँ कहाँ चले जाते हैं कि ईसाई और मुसलमान विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर धर्मान्तरण करते हैं। तब साम्यवादी, बसपा, सपा तथा लालू यादव जैसे नेताओं को क्यों सांप सूंघ जाता है? परन्तु जब हम अपने भूले भटके भाइयों को घर वापिसी का प्रयास करते हैं तो इन हिन्दू विरोधियों के पेट में क्यों दर्द हो जाता है? आर्य जी ने यह प्रस्ताव रखा कि धर्म परिवर्तन पर रोक लगनी चाहिये इसके लिए सरकार को कानून बनाना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि हम किसी के धर्म को परिवर्तित नहीं करना चाहते परन्तु हम इस बात की आज्ञा नहीं दे सकते कि दूसरे लोग हमारे निर्धन हिन्दुओं को विभिन्न प्रकार के लालच देकर धर्म परिवर्तन करायें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री मा० रामपाल दहिया ने आर्य जनता का धन्यवाद किया जिनके पुरुषार्थ से रामपालदास जैसे पाखण्डी जेल में जा सका। दहिया जी ने सरकार को सचेत किया कि ईसाई-मुस्लिम मतावलम्बी अपनी शरारतों से बाज नहीं आए तो आर्य हिन्दू जनता भी धर्मान्तरण बारे कहा कि हिन्दू सहिष्णु हैं परन्तु हमारी सहिष्णुता

को कायरता न माना जाये। मेवात क्षेत्र में जिस प्रकार लवजिहाद के नाम से हिन्दू लड़कियों का धर्म परिवर्तन और हरिजन हिन्दुओं को गुपचुप तरीके से धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है, इसकी सरकार गुप्त तरीके से जांच कराये।

आत्मशुद्धि आश्रम के संचालक स्वामी धर्ममुनि ने बताया कि परमपिता परमात्मा ने असंख्य योनियों के पश्चात् हमें यह मानव चोला प्रदान किया है। इसकी सार्थकता तभी है जब हम इस जीवन में परोपकार, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा में व्यतीत करें। स्वामी बालेश्वरानन्द जी महाराज ने बताया कि योग के माध्यम से हम उस परम सत्ता तक पहुंच सकते हैं अत: योग को जीवन में अपनायें। गुड़गांव के विधायक उमेश अग्रवाल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। समाजसेवी प्रमोद सलूजा जी ने ध्वजारोहण किया। गोशाला संघ हरियाणा के अध्यक्ष आचार्य योगेन्द्र आर्य एवं महामन्त्री सर्वमित्र आर्य ने गोवंश की वृद्धि एवं रक्षा के उपायों पर चर्चा की। भजनोपदेशक सन्दीप आर्य एवं उपेन्द्र आर्य जी के भजनों से जनता आनन्द विभोर हुई। शिवजी नगर के कार्यकर्त्ताओं में कन्हैयालाल आर्य एवं महेन्द्र प्रताप आर्य को सम्मानित किया गया। इसके साथ कुन्दनलाल साहनी मॉडल टाउन से एवं सुश्री चन्द्रकान्ता आर्या शिवाजीनगर को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

मंच का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री प्रभुदयाल चुटानी ने किया। नरेन्द्र कालड़ा, नरवीर चौधरी, बलदेव कृष्ण गुगलानी, नरेन्द्र तनेजा, रामलाल आर्य, वीरेन्द्र सेतिया, एस.पी. मोहन, अशोक शर्मा, अशोक आर्य, ईश्वर सिंह सहित गुड़गांव के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द योगी के रूप में

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

गतांक से आगे....

एक दिन अल्काट महाशय ने स्वामी जी से विनय की कि 'भगवन्! सुना है कि शंकराचार्य अपने कलेवर से आत्मा को निकाल कर परकाया में प्रवेश कर जाते थे। इसमें आपकी क्या सम्मति है।' स्वामी जी ने उत्तर दिया, 'शंकराचार्य का परकाया प्रवेश करना एक ऐतिहासिक विषय है। उसके सत्यासत्य में कुछ कहा नहीं जा सकता। परन्तु इतना तो मैं भी दिखा सकता हूँ कि चाहे जिस अंग में अपनी सारी जीवन शक्ति को केन्द्रित कर दूँ। इसमें शेष सारा शरीर-जीवन-शून्य हो जाएगा। परकाया प्रवेश तो इससे आगे एक पांव उठाना मात्र ही है।'

एक उत्सव में दानापुर से श्री जनकधारी लाल जी आदि कई सज्जन स्वामी जी के दर्शनों को वहां आये। महाराज के मंगल-मिलाप और मनोहर वार्तालाप से उनको अति प्रसन्नता हुई। स्वामी जी ने कहा, 'दानापुर से चलते समय आपकी यह कामना थी कि वहां चलकर अमुक-अमुक प्रश्न पूछेंगे। इस समय हमें अवकाश है जो पूछना हो पूछ लीजिए।' वे सब अति चकित हुए कि स्वामी जी ने हमारी मन:कामना तक को कैसे जान लिया? मरने से कुछ समय पहले स्वामी जी ने पंडित कमलनयन से कहा कि सुन्दरलाल को बुलाओ। लोगों ने कहा कि वे अभी नहीं आये। स्वामी जी कहने लगे कि नहीं वे आ गये हैं परन्तु स्वामी जी के मरने की देर थी कि सुन्दरलाल वहां आ गये। सभी को आश्चर्य था कि स्वामी जी को उनके आगमन का आभास था।

स्वामी जी योगविद्या की वृद्धि चाहते थे तथा योग्य विद्यार्थी मांगते थे। स्वामी जी कहते थे कि पहले योगविद्या के अधिकारी बनें, फिर योग सीखें। योग विद्या क्रियात्मक और अनुभव सिद्ध शास्त्र है। यदि कोई सच्ची लगन से तीन मास तक मेरे पास निवास करें और मेरे कथनानुकूल योग-क्रियाये साधें तो वह इस शास्त्र की सिद्धियों का साक्षात् स्वयं कर लेगा। स्वामी जी ने एक बार भूत-प्रेत के भ्रम का खण्डन करने के बहाने एक खेल दिखाया। जिस आवास में वे रहते थे उसके तीन दरवाजे और दो ताक थे। उन्होंने उन दोनों ताकों में दीपक जलाकर आमने सामने रख दिए फिर उनमें से एक दीपक को बुझा दिया और दूसरे को बुझा देने का आदेश दिया। जिस समय दूसरा दीपक बुझाया गया तो तत्काल पहला दीपक अपने आप जल उठा। इस प्रकार एक दीपक के बुझने पर दूसरे दीपक के अपने आप जल उठने का खेल वहां उपस्थित लोग बड़ी देर तक देखते रहे। दर्शकों को आश्चर्य भी होता था कि बीस-पच्चीस हाथ अन्तर पर रखे हुए इन दीपकों में यह कैसा चमत्कार हो रहा था। खेल समाप्ति पर महाराज ने कहा यह विद्या की बात है। पूर्ण ब्रह्मचारी और पूर्ण योगी होने के कारण महर्षि दयानन्द समस्त विद्याओं में पूर्णतया निपुण थे।

बेटी बचाओ अभियान के तहत कम्बल वितरण

झज्जर 22 दिसम्बर। वैदिक सत्संग समिति के तत्त्वावधान में नई धर्मशाला में बेटी बचाओ अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने की। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विक्रमदेव रहे। इस कार्यक्रम में गरीब बेटियों/महिलाओं व मेधावी, सराहनीय कार्य करने वाली बेटियों को कम्बल व मोमेन्टम देकर सम्मानित किया गया और 101 कम्बल वितरित किये गये।

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि यज्ञ और सत्संग प्रत्येक परिवार में होना आवश्यक है क्योंकि सत्संग से ही हमें पाप और पुण्य का पता चलता है और जो व्यक्ति पाप और पुण्य को समझता है वह ही कन्या भ्रूणहत्या जैसे महापाप से बच सकता है। कन्या भ्रूणहत्या को रोकने के लिए हर एक परिवारका सहयोग जरूरी बताते हुए इस सामाजिक कलंक को दूर करने का आग्रह किया।

इस कार्यक्रम में स्वामी रामानन्द सरस्वती, स्वामी शिवमुनि, बहादुरगढ़ पं० रमेश कौशिक, पं० जयभगवान आर्य, सुभाष आर्य, डॉ. अशोक नागपाल, सरला शर्मा एडवोकेट, आजाद सिंह दूहन, पूर्व प्राचार्य, बबली पार्षद, मन्जू सैनी आदि अनेक वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में कहा कि कन्या भ्रूणहत्या जैसे महापाप को समाज से मिटाना बहुत जरूरी है। बेटी को बचाना और बेटी को पढ़ाना दोनों ही जरूरी है व वर्तमान आवश्यकता है। 40 बेटियों को कम्बल व 31 बेटियों को स्काफ देकर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में बेटी इशेच्छा, निहारिका ने कन्या भ्रूणहत्या के बारे में विशेष गीत प्रस्तुत करके श्रोताओ का मन मोहा। इस अवसर पर राव रतीराम, सूबेदार भरतसिंह, चन्द्रपाल, भगवानसिंह आर्य, द्वारकाप्रसाद प्राध्यापक, ओमप्रकाश यादव, राजन रंजन, सीतादेवी, सोनिया, कनिका, नन्दिनी, काजल, रेखा, प्रेमलता, आरती आदि सैकड़ों महिला-पुरुष व बालक-बालिकाएं शामिल हुए।

-रमेशचन्द्र कौशिक, अध्यक्ष

राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली (जीन्द) हरयाणा का मकर संक्रान्ति पर्व एवं वार्षिक महोत्सव

मकरसंक्रान्ति पर्व प्राचीनकाल से ही गोपूजा के लिए प्रसिद्ध है। दिनांक 14.1.2015 बुधवार मकरसंक्रान्ति पर्व पर सभी गोमाता हेतु गुड़, दलिया, खल, बिनौला लाकर गोमाता का सत्कार करें जिससे प्रत्येक मनुष्य कृतघ्नता के पाप से बच सके। गऊ का दु:ख मनुष्य की परेशानी है। गऊशाला में प्रतिदिन गायों की संख्या आशातीत बढ़ रही है। उत्सव के समय ही गोसम्मेलन होगा। अत: अधिक से अधिक संख्या में महोत्सव पर पधार कर साधु-महात्माओं, विद्वानों, राजनेताओं तथा भजनोपदेशकों द्वारा पीड़ित गोमाता के दर्द व गो-महिमा सुनें तथा पुण्यलाभ प्राप्त करें। विशेष गोमाता सेवा हेतु बढ़-चढ़कर दान देवें।

संचालक
आचार्य बलदेव जी, संरक्षक,
आ.प्र.सभा, हरयाणा तथा गोशाला संघ हरियाणा
मो० 9466254473

सह-संचालक
आचार्य राजेन्द्र
राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली
मो० 9466013563

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

यह व्यवहार आयोचित नहीं

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

हरेक आर्य संकल्प लेता है कि मैं आर्य मर्यादाओं को नहीं तोडूंगा और ऐसा संकल्प लेना भी चाहिए। आहार, विहार, आचार से ही आर्य की पहचान होती है। यहाँ हम व्यवहार पक्ष को लेते हैं। महर्षि दयानन्द ने मनुष्यों के महा उपकार के लिए पुस्तक 'व्यवहारभानु' लिखी थी। आर्यों को अपने व्यवहार पक्ष में विशेष सचेत रहना चाहिए, जिससे कि वे समाज में सम्मान पाकर स्वयं सुखी रह सकें व संगठन को मजबूत बना सकें।

आचार्य अभय आर्य

पहले हम देखते थे कि हमारे बड़े जब किसी के घर जाते थे तो अन्दर जाने से पहले खांसते थे। उनका अनुसरण करते हुए हम भी जब किसी के घर जाते तो पौड़ियां चढ़ते हुए पैरों पर जोर देकर थप-थप की ध्वनि करते थे। उन लोगों की वृत्ति बुरी समझी जाती थी व समझी जाती हैं जो लोग छुपकर दूसरों की बात सुनते हैं या चुपचाप पीछे आकर बात सुनते हैं, फिर उसी आधार पर एक-दो बात स्वयं मिलाकर समाज में बातें करते फिरते हैं तथा परस्पर का वैमनस्य उत्पन्न करवाकर सामाजिक शान्ति को भंग करते हैं। ऐसे लोगों की समाज में अलग रूप से निन्दित पहचान होती है।

आजकल एक ऐसी ही निन्दित वृत्ति समाज में बहुत ज्यादा बढ़ रही है, जिससे आर्यों को बचना चाहिए। आजकल 'स्पीकर' व 'टेपिंक' मोबाइल फोन का प्रयोग इस दुष्प्रवृत्ति में हो रहा है। हमने अनेक आर्य भाइयों को देखा है कि वे 'स्पीकर' चालू करके एक दूसरे को दूसरों की बात सुनाते हैं। टेपिंग करके भी यही काम करते हैं। पहले तो जिसका इनके पास फोन आता है उसे बातों में उलझाकर अपने विश्वास में लेते हैं, उससे किसी के बारे में तनिक भी विपरीत शब्द निकलवाकर सम्बन्धित व्यक्ति को 'स्पीकर' का टेपिंग के माध्यम से सुनाते हैं। इस प्रकार ये स्वयं की वृत्ति को तो दूषित करते ही हैं, साथ ही पारस्परिक वैमनस्य फैलाने का चलता-फिरता केन्द्र बन जाते हैं। आर्य ऐसी वृत्तियों को छोड़ें व सावधान भी रहें। गुमनाम पत्र निकालने वालों की तो बात ही क्या करनी!

आर्य स्वामी श्रद्धानन्द के उस संदेश को सदैव याद रखें जिसमें उन्होंने कहा था कि ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है जो विरोधी को भी धोखा देना वैसा ही पाप समझें, जैसा कि अपने भाई को। शुक्रनीति में भी कहा है—

स्वशंकितानां सामीप्यं त्यजेत् वै नीच सेवेन।
समलापं नैव शृणुयात् गुप्तः कस्यापि सर्वदा॥

जो अपने ऊपर संशय करता हो उसकी निकटता छोड़ दें, उसी प्रकार नीच का साथ भी निश्चय पूर्वक साथ छोड़ देवे। कभी किसी की भी गुप्त बात को नहीं सुनना चाहिए।

ओ३म्

पास रहता हूँ तेरे सदा मैं अरे, तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूँ?
मूढ़ मृगतुल्य चारों दिशाओं में तू, ढूंढ़ने मुझको जाए तो मैं क्या करूँ?
कोसता दोष देता मुझे है सदा, मुझको यह न दिया मुझको वह न दिया।
श्रेष्ठ सबसे मनुष्य तन तुझे दे दिया, सबर तुझको न आये तो मैं क्या करूँ?
तेरे अन्तःकरण में विराजा हूँ मैं, कर न यह पाप संकेत करता हूँ मैं।
लिप्त विषयों में हो संकेत मेरा भला, ध्यान में तू न लाये तो मैं क्या करूँ?
जाँच अच्छे-बुरे की तुझे हो सके, इसलिए बुद्धि मैंने दी है तुझे।
किन्तु तू मन्दभागी अमृत छोड़कर, घोर विषयों में जाये तो मैं क्या करूँ?
फूल-फल शाक मेवे व दुग्धादि सब, मधुर आहार मैंने तुझे हैं दिये।
तू तम्बाकू और मद्य-मांसादि खा, रोग तन में लगाये तो मैं क्या करूँ?
सरस सुखकर पदार्थ सुदृश्यों भरा, विश्व सुन्दर है कैसा यह मैंने दिया।
अपनी करतूत से स्वर्ग वातावरण को, नरक तू ही बनाये तो मैं क्या करूँ?

सत्य को सत्य कहना धर्म के अनुकूल है।
इसके कारण ही किसी का पक्ष करना भूल है॥

नेकी बदी दो गाड़ियां रहती सदा तैयार।
मूरख चढ़ते बदी पर और नेकी पर होशियार॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

शैदा-ए-वतन अपनी हस्ती भी मिटा बैठा

कभी विश्वगुरु कहलाने वाले भारत की जनता को अब फिरंगियों का गुलाम बनकर रहना पड़ रहा था। कहा जाता है कि कीमती चीज वह होती है जिसकी आवश्यकता होती है। ऐसे में जरूरत थी देश को आजादी दिलाने की। उस समय भारत में ऊधमसिंह सरीखे सपूत पैदा हुए जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

जगदीश चहल डी.पी.ई.

ऊधमसिंह का जन्म 26 दिसम्बर सन् 1899 को पंजाब के सुनाम नगर में टहलसिंह के घर हुआ था। 20 वर्ष की आयु में 13 अप्रैल सन् 1919 को उसने एक ऐसा खौफनाक दृश्य देखा जिससे याद आते ही भारत की जनता की भुजाएँ आज भी फड़कने लग जाती हैं। जलिया वाले बाग में एकत्रित हुए भारतीयों पर तत्काल लैफ्टिनेंट गवर्नर माईकल ओ०डायर के आदेश पर अंग्रेजी सरकार के अधिकारी जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवाईं। घटनास्थल पर एक कोने से एक अतर कौर महिला अपने पति की लाश पर सिर पटक-पटक कर रो रही थी। इस रोंगटे खड़े करने वाले दृश्य को देखकर ऊधमसिंह का खून खौल उठा और अतरकौर को वचन दिया, 'मैं शपथ लेता हूँ कि निर्दोष लोगों की हत्या का बदला अवश्य लिया जाएगा।'

ऊधमसिंह जनरल डायर से बड़ा हत्यारा तो ओ० डायर को मानते थे क्योंकि आदेश देने वाला तो वही था। ऊधमसिंह ने पक्की ठान ली कि इसे जिन्दा नहीं छोडूंगा।

सन् 1937 में महान् क्रान्तिकारी ने इंग्लैण्ड जाकर पढ़ाई आरम्भ कर दी लेकिन पढ़ाई एक बहाना था। निशाना तो माईकल ओडायर पर ही था। एक दिन समाचार पत्र में पढ़ा कि 13 मार्च 1940 को लंदन के केकंस्टन हाल में एक सभा को सम्बोधित करेंगे। ऊधम सिंह ने अपनी पुस्तक के बीच में पिस्तौल रखी और हाल में पहुँच गया। सभा को सम्बोधित कर जब जनरल ओडायर अपना स्थान ग्रहण करने लगा तो ऊधमसिंह ने एक के बाद एक पांच गोलियां ओडायर को मारी और वहीं पर उसकी मृत्यु हो गई। ऊधमसिंह के चेहरे पर मुस्कान थी।

अपने नसीब में अजल से ही ये सितम रखा था।
रंज रखा था मुहिम रखी थी गम रखा था।
किसको परवाह थी और किसमें ये दम था।
ऊधमसिंह वादि-ए-गुरबत में कदम रखा था।

क्योंकि 21 वर्ष बाद अतर कौर को दिया हुआ वचन पूरा हुआ। ऊधमसिंह को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर पाई थी चलने लगे तो एक महिला ने पुलिसकर्मी थी वह दरवाजे पर हाथ फैलाकर खड़ी हुई। ऊधमसिंह ने अपनी सभ्यता व संस्कृति का परिचय दिया कि हमारे देश में पराई महिला के हाथ नहीं लगाया जाता इसलिए मैं आपको कुछ नहीं कहूँगा, तब पीछे से पुलिस ने पकड़ा था।

2 अप्रैल 1940 के दिन ऊधमसिंह को लंदन कचहरी में पेश किया गया। सिंह गर्जना करते हुए ऊधमसिंह ने कहा कि मैंने अपनी पूर्व योजना के तहत मारा है, क्योंकि यह जलियांवाले बाग हत्याकाण्ड का मुख्य अपराधी (हत्यारा) था। मैंने तो छोटा-सा विरोध किया है यह मेरा नैतिक कर्त्तव्य था, सो मैंने किया है। मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं कि मुझे 10 या 20 या 50 वर्ष की सजा या फाँसी हो। अदालत अपना वक्त न बर्बाद करे, निर्णय दे और 31 जुलाई 1940 को ओल्ड वैली जेल में भारतमाता के इस सच्चे सपूत को फाँसी दी गई।

नहीं याद कि जब हमें कि मैं हैं क्या,
तो कैसे बता दें कि हम होंगे क्या।
लेकिन मुझे एहसास है कि जो हम थे वो अब नहीं हैं।
कभी आसमान पर थे जहाँ के लेकिन आज पाताल में भी नहीं हैं।

-जगदीश चहल आर्य, आर्य बाल भारती विद्यालय, पानीपत 9416295411

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

सृष्टिसंवत् 1970853115 पर जूनियस जूनियर का संवत् 2015 भारी क्यों?

❑ महावीर धीर 21/1227 प्रेमनगर, रोहतक चलभाष 9466565162

इंग्लैंड के राजा जूनियस जूनियर की बड़े क्षेत्र पर विजय हुई। राजा विजय दिवस को प्रतिवर्ष मनाने लगा। कई वर्ष बाद उसने अपने राज्य में नया कलेंडर जारी किया। इस कलेंडर में उसने अपने विजय दिवस को वर्ष का पहला दिन दिखाया और महीने का नाम अपने नाम पर रखा। जेनियस का 'जेनि' और जूनियर यर लेकर 'जेनअरी' यह नाम पहले महीने का रखा गया। जैसे-जैसे अंग्रेजों का राज्य फैलता गया वैसे-वैसे ही यह कलेंडर भी वहीं-वहीं लागू होता गया। आज पूरे विश्व में यह कलैंडर लागू है। भले ही बहुत से देशों के अपने-अपने नववर्ष भी मनाए जाते हैं लेकिन विश्व स्तर पर अंग्रेजों का 2015 वर्षीय कलेंडर ही व्यवहार में चालू है। इसमें अनेक बार दिन और महीनों तक की भी घटत-बढ़त की गई। इसको ग्रेगोरियन कलेंडर भी कहा गया। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या पहली जनवरी को प्राकृतिक वैज्ञानिक रूप से वास्तविक नववर्ष शुरू होता है? क्योंकि सभी प्रकार के लेन-देन के व्यवहार, ऋतु परिवर्तन, नए अन्न का आना, बैंकों के खाते बनना, विभिन्न बजट बनाना आदि कार्य तो अप्रैल से शुरू किए जाते हैं।

अंग्रेज लोग पहली अप्रैल को अप्रैल फूल कहकर मनाते भी हैं। भारतीय कलैंडर में चैत्र मास से नववर्ष आरंभ होता है। अप्रैल भी लगभग चैत्र मास के आसपास 10-15 दिन के अंतर से होता है। इस प्रकार वास्तविक प्राकृतिक वैज्ञानिक रूप से नववर्ष अप्रैल या चैत्र में ही शुरू होता है। अंग्रेज भी अप्रैल के नववर्ष को ही वास्तविक रूप में होने के कारण नकार नहीं पाए, लेकिन उन्होंने इसका नाम वित्तीय वर्ष रखा है। जब सब बातों की शुरुआत अप्रैल (चैत्र) से है तो जनवरी किस बात का नववर्ष है? यह तो एक वर्ष में दो वर्षों का व्यवहार हो गया है। वर्ष लिखने में भी दोगलेपन का व्यवहार चल रहा है। हर जगह दो वर्ष का व्यवहार किया जाता है जैसे वर्ष 2013-14 का बजट, 2013-14 का परीक्षा परिणाम सभी आंकड़ों में दो वर्षों का प्रयोग किया जा रहा है। यदि किसी का जन्म दिन 29 फरवरी को है या कोई घटना 29 फरवरी को हुई उसकी काल गणना कैसे होगी? यह अधूरापन इस कालान्तर में है, जबकि भारतीय कालान्तर में तिथि भले ही दिन में या रात में आये, आएगी अवश्य ही। अंग्रेजी कलान्तर के 4 मासों के नाम शुद्ध संस्कृत में चले आ रहे हैं। सितम्बर (सातवां मास) अक्टूबर (आठवां) नम्बर (नौवां) दिसम्बर (दसवां)। दिसम्बर दसवां मास है पौष भी दसवां है। इसके बाद 2 मास वर्ष के शेष रहते हैं। दुल्हैंडी का दिन वर्ष का पहला दिन है उसे हमने बिगाड़ दिया है। वास्तव में दुल्हैंडी (द्वन्द्वी) पर नववर्ष के दिन शारीरिक व संगीत, गायन आदि की प्रतियोगिताएं होती थीं। कहीं-कहीं अब भी दौड़, कूद, कबड्डी, कुश्ती, बैलगाड़ी दौड़, घुड़दौड़ आदि ढोल नगाड़ों की थाप और धुन पर आयोजित होती हैं, लेकिन ज्यादातर जगह तो एक-दूसरे पर कीचड़ डालते हैं। आने जाने वालों पर भी गुब्बारों और पिचकारियों से वार किया जाता है। शराब पीकर भी त्यौहार के बहाने वार किए जाते हैं। झगड़े और मौत भी होती हैं। होली वर्ष का अन्तिम दिन है होली में भी शास्त्रों में वर्णित वृक्षों की लकड़ियों व सामग्री न डालकर कुछ भी डालकर अग्नि प्रदीप्त कर दी जाती हैं। अन्धविश्वासी लोग कुछ अजीब ढंग से होली पूजन भी करते हैं। होली की राख व अग्नि तक घर ले जाते हैं। सब कुछ गलत तरीके से किया जा रहा है। त्यौहार झगड़े प्रदूषण और मौत के संवाहक बनते जा रहे हैं। कुछ स्त्री पुरुष विकृत परंपरा में कुछ शालीनता से पानी डंडे लाठी से भी होली दुल्हैंडी या फाग कहकर खेलते हैं, लेकिन अपने दो अरब के संवत् की याद न करके अंग्रेजों के 2015 के ही संवत् को याद करके 31 दिसंबर की आधी रात को नववर्ष के नाम पर बम फोड़ते हैं। होटलों और नदी, समुद्र आदि के तटों पर शराब पीकर झगड़े हो हल्ला तथा अशिष्ट व्यवहार करते हैं। भारत में पैदा होकर भारत की महान संस्कृति, इतिहास व गौरव को मिट्टी में मिला देते हैं। आज के समाज तथा विशेष रूप से युवाओं को अपने पवित्र त्यौहारों तथा इतिहास को समझाना चाहिए। नववर्ष पर होली दुल्हैंडी, वैदिक पद्धति अनुसार मनाकर नववर्ष का संकल्प लेना चाहिए। भारतीय परम्परा में होली के 15 दिन बाद शुक्ल पक्ष में पहली तिथि प्रतिपदा को भी नववर्ष मनाने की परम्परा है। भले ही उस दिन भी नववर्ष मनाएं। भले ही वैशाख में वैशाखी को भी मनाएं लेकिन जूनियस जूनियर के विजय दिवस को नववर्ष मानकर बिल्कुल न मनाएं। यह महान् भारत के लगभग 2 अरब वर्ष के संवत् का घोर अपमान है। यह गीदड़ के सामने शेर की नाक रगड़वाने के समान है। यह कुकृत्य स्वयं हम ही कर रहे हैं। कहां 2 अरब कहां दो हजार की हैसियत? भाषा भी उनकी, दिन मास, वर्ष भी उनके, गले में दास प्रथा की निशानी टाई भी उन्हीं की। राष्ट्रगान में उन्हीं की स्तुति, तुम्हारा क्या? क्या तुम्हारी कोई संस्कृति नहीं? कोई भाषा नहीं? तुम भाषा और संस्कृति विहीन देश के नागरिक हो क्या? भाषाएं कितनी पढ़ो लेकिन अपनी को ठुकराना क्यों सीख लिया? हर बात में आत्मगौरव? गिराना और अंग्रेजीयत को अपनाना क्यों सीख लिया? जब चैत्र में हर पेड़ पौधे, घास-फुस की फूटती नई कौंपलें, नाचते मोर, कूकती कोयल, पके व पकते हुए अन्नों की सुगंध, समशीतोष्ण बसंत की उमंग व मस्ती शरीर में बनती नई कौशिकाएं, इस प्रकार समस्त प्रकृति जब नववर्ष की शुभकामनाएं दे रही होती है। उस सच्ची मंगल कामना को छोड़कर 31 दिसंबर की आधी रात को ठिठुरते हुए विदेशी भाषा में नकली विदेशी वर्ष को 'हेप्पी न्यू ईयर' कह मनाते-मनाते अपना वर्ष ही भूल बैठे हो। अब आप स्वतंत्र हो। स्वतंत्र, जागरूक राष्ट्रभक्त, नागरिक का सत्य व्यवहार कर सच्चे मानव बनो, मानसिक गुलामी छोड़ दो।

'वेदों की ओर लौटो' कार्यक्रम.... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

बाद स्कूलों के विद्यार्थी, आर्यसमाजों से आये हुए हजारों की संख्या में दो किलोमीटर लम्बा जुलूस अनुशासन बनाए चल रहा था। शोभायात्रा जब डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-15 सोनीपत पहुंची तो संस्था के प्राचार्य विवेक मित्तल ने सभी का हृदय की गहराइयों से स्वागत किया। उसके बाद 11.30 से 1.30 तक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि देने के लिए सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आचार्य विजयपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की। मुख्य अतिथि श्री राजीव जैन प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा, मुख्यवक्ता वैदिक विद्वान् डॉ० देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र रहे।

इनके इलावा श्रद्धांजलि देने वाले प्रमुख व्यक्तियों में आचार्य योगेन्द्र आर्य प्रधान गोशाला संघ हरियाणा, मा० रामपाल आर्य सभामन्त्री, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढौत, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आचार्य वेदनिष्ठ गुरुकुल जूंआ, आचार्य सन्दीप दर्शनाचार्य रोजड़, श्री वेदमुनि जी, श्री वेदप्रकाश मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा, श्री कुलदीप आर्य आदि अनेक आर्यजन सम्मिलित हुए।

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **102वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 11 जनवरी 2015, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : आचार्य सन्दीप आर्य,
आर्यसमाज सैक्टर-14, सोनीपत
कार्यक्रम-11 जनवरी 2015 प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
यज्ञ, भजन, प्रवचन
निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।